



MICROFINANCE INSTITUTIONS NETWORK

Media Visibility Report

Case Study: Satya Microcapital: Helping Elderly Entrepreneurs to realise and achieve their Dreams

Date of Dissemination: August 11, 2020

Media Coverage Index

S. No.	Date	Publication Name	Edition
1.	31.08.2020	Pratah Kiran	Patna
2.	28.08.2020	Dainik Aaj	Patna
3.	23.08.2020	Nav Bihar Times	Patna
4.	18.08.2020	Media Darshan Live	Patna
5.	18.08.2020	Tarun Mitra	Patna
6.	13.08.2020	The Morning India	Patna
7.	13.08.2020	Rashtriya Sahara	Patna
8.	11.08.2020	Roznama Rashtriya Sahara	Patna

Publication	Pratah Kiran
Edition	Patna
Date	31 st August, 2020
Page No.	4

सत्या माइक्रोकैपिटल: बुजुर्ग उद्यमियों के सपनों को साकार करने में मददगार

पटना।

बिहार: यह एक आम धारणा है कि केवल युवा लोग ही महत्वाकांक्षी उद्यमी बनने का सोच सकते हैं, और केवल वे ही सफलता के लिए प्रयास कर सकते हैं, लेकिन बिहार में पटना के एक छोटे से गाँव गोनपुरा में रहने वाली 55 वर्ष की महिला, रीता देवी और उनके पति ने इस रूढ़िवादी सोच को नजरअंदाज करते हुए विकास की एक प्रेरणादायक मिसाल पेश की है।

रीता की सौहन प्रसाद से शादी हुए 30 वर्ष से अधिक हो चुके हैं। एक अच्छे मीन-बाप के कर्तव्यों को पूरा करते हुए, उन्होंने अपने दो बेटों के लिए छोटे-छोटे बिजनेस जमाने और उनकी शादी करने में अपनी कड़ी मेहनत से अर्जित की गई सारी बचत लगा दी।

मीन-बाप के अपने कर्तव्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, इस दम्पति ने अपने साधारण-से छोटे स्टोर पर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया। लेकिन अपने बच्चों के लिए अपनी जिन्दगी की सारी बचत खर्च करने के बाद, उन्होंने अपने व्यवसाय को जमाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा और धन की कमी के कारण अपने स्टोर के संचालन में उनको चुनौतियों का सामना करना पड़ा। सैजमर्त की अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अक्सर उन्हें अपने बच्चों पर निर्भर रहना पड़ता था, जो उन्हें मंजूर नहीं था।

एक दिन रीता अपनी एक सहेली से मिलने गई और उसे अपनी समस्या के बारे में बताया। रीता की सहेली ने रीता को सत्या माइक्रोकैपिटल और माइक्रोफाइनेंस सेवा के बारे में बताया। रीता की सहेली सत्या



माइक्रोकैपिटल की मौजूद सदस्य थीं और सत्या माइक्रोकैपिटल से मिले माइक्रोलोन की मदद से सफलतापूर्वक अपना डेयरी व्यवसाय स्थापित किया था।

ऑफर को समझने के बाद तुरंत, रीता 2017 में सत्या माइक्रोकैपिटल का सदस्य बन गयी और 35,000 रुपये के पहले लोन के लिए आवेदन कर दिया। उद्यमी दम्पति ने लोन से प्राप्त धन का उपयोग अपने स्टोर का विस्तार करने और ऑफर में नई इन्वेंट्री जोड़ने में किया। रीता ने घर के बने बिरुकट भी बेचने शुरू कर दिये, जो जल्दी ही गाँव में लोकप्रिय हो गए। जनरल स्टोर चलाने के अपने पिछले अनुभव के कारण, रीता और उनके पति नये काम को करने में सक्षम थे, और उन्हें एक निश्चित आमदनी भी लेने लगी, जिसने उनकी जिन्दगी को उपलब्धि और नया जीवन पाने का अहसास दिया।

चूंकि वे अपना व्यवसाय अच्छी तरह से कर रहे थे, इसलिए दम्पति ने अपने लोन चुकाने की अवधि से पहले ही लोन चुकाने का फैसला किया और अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए 50,000 रुपये के दूसरे लोन

के लिए आवेदन किया।

रीता देवी पिछले तीन वर्षों से लगातार सत्या के साथ जुड़ी हुई हैं। अपने बिजनेस की इस सफर में उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं और सबसे नई उपलब्धि उनके मौजूद स्टोर से सटे एक और स्टोर का शुभारंभ है, जिसके लिए उन्होंने हाल ही में 1,50,000 रुपये के माइक्रो बिजनेस लोन के लिए आवेदन किया था।

अपनी सफलता के बारे में बात करते हुए, रीता देवी ने बताया कि “इस उम्र में जब सभी लोग बुजुर्गों से घर पर बैठने की उम्मीद करते हैं, हमें खुशी है कि हमने अपने सपनों पर काम किया और कभी हार नहीं मानी। हमारा एक सपना था और उसी को साकार करने के लिए काम करना शुरू किया। अब हम दोनों स्वतंत्र जीवन जी रहे हैं जो हम हमेशा से ही चाहते थे।”

अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए, उन्होंने कहा कि “हम आज जहां पहुंचे हैं, वहां तक पहुंचाने में सत्या माइक्रोकैपिटल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। अपने जैसे गरीब लोगों की मदद करने के लिए, मैं सत्या की पूरी टीम का हृदय से आभारी हूँ।”

Publication	Dainik Aaj
Edition	Patna
Date	28 th August, 2020
Page No.	10

सत्या माइक्रोकैपिटल की मदद से बिहार के बुजुर्ग का सपना हुआ साकार

पटना। यह एक आम धारणा है कि केवल युवा लोग ही महत्वाकांक्षी उद्यमी बनने का सोच सकते हैं, और केवल वे ही सफलता के लिए प्रयास कर सकते हैं, लेकिन बिहार में पटना के एक छोटे से गाँव गोनपुरा में रहने वाली 55 वर्ष की महिला, रीता देवी और उनके पति ने इस रूढ़िवादी सोच को नजर अंदाज करते हुए विकास की एक प्रेरणादायक मिसाल पेश की है। रीता की सोहन प्रसाद से शादी हुए 30 वर्ष से अधिक हो रहा है। एक अच्छे माँ-बाप के कर्तव्यों को पूरा करते हुए, उन्होंने अपने दो बेटों के लिए छोटे-छोटे बिजनेस जमाने और उनकी शादी करने में अपनी कड़ी मेहनत से अर्जित की गई सारी बचत लगा दी। माँ-बाप के अपने कर्तव्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, इस दम्पति ने अपने साधारण-से छोटे स्टोर पर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया। लेकिन अपने बच्चों के लिए अपनी जिन्दगी की सारी बचत खर्च करने के बाद, उन्होंने अपने व्यवसाय को जमाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा और धन की कमी के कारण अपने स्टोर के संचालन में उनको चुनौतियों का सामना करना पड़ा। रीता की सहेली सत्या माइक्रोकैपिटल की मौजूदा सदस्य थीं और सत्या माइक्रोकैपिटल से मिले माइक्रोलोन की मदद से सफलतापूर्वक अपना डेयरी व्यवसाय स्थापित किया था। ऑफर को समझने के बाद तुरंत, रीता 2017 में सत्या माइक्रोकैपिटल का सदस्य बन गयीं और 35,000 रुपये के पहले लोन के लिए आवेदन कर दिया। उद्यमी दम्पति ने लोन से प्राप्त धन का उपयोग अपने स्टोर का विस्तार करने और ऑफर में नई इन्वेंट्री जोड़ने में किया। रीता ने घर के बने बिस्कुट भी बेचने शुरू कर दिये, जो जल्दी ही गाँव में लोकप्रिय हो गए। जनरल स्टोर चलाने के अपने पिछले अनुभव के कारण, रीता और उनके पति नये काम को करने में सक्षम थे, और उन्हें एक निश्चित आमदनी भी होने लगी, जिसने उनकी जिन्दगी को उपलब्धि और नया जीवन पाने का अहसास दिया।

Publication	Nav Bihar Times
Edition	Patna
Date	23 rd August, 2020
Page No.	4

उद्यमियों के सपनों को साकार करने में मददगार बना सत्या माइक्रोकैपिटल

नबिटा संवाददाता

पटना। बिहार यह एक आम धारणा है कि केवल युवा लोग ही महत्वाकांक्षी उद्यमी बनने का सोच सकते हैं और केवल वे ही सफलता के लिए प्रयास कर सकते हैं लेकिन बिहार में पटना के एक छोटे से गाँव गोनपुरा में रहने वाली 55 वर्ष की महिलाएँ रीता देवी और उनके पति ने इस रूढ़िवादी सोच को नजरअंदाज करते हुए विकास की एक प्रेरणादायक मिसाल पेश की है। रीता की सोहन प्रसाद से शादी हुए 30 वर्ष से अधिक हो रहा है। एक अच्छे माँ-बाप के कर्तव्यों को पूरा करते हुए उन्होंने अपने दो बेटों के लिए छोटे-छोटे बिजनेस जमाने और उनकी शादी करने में अपनी कड़ी मेहनत से अर्जित की गई सारी बचत लगा दी। माँ-बाप के अपने कर्तव्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद इस दम्पति ने अपने साधारण से छोटे स्टोर पर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया। लेकिन अपने बच्चों के लिए अपनी जिंदगी की सारी बचत खर्च करने के बाद उन्होंने अपने व्यवसाय को जमाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा और धन की कमी के कारण अपने स्टोर के संचालन में उनको



चुनौतियों का सामना करना पड़ा। रोजमर्रा की अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अक्सर उन्हें अपने बच्चों पर निर्भर रहना पड़ता था जो उन्हें मंजूर नहीं था। एक दिन रीता अपनी एक सहेली से मिलने गईं और उसे अपनी समस्या के बारे में बताया। रीता की सहेली ने रीता को सत्या माइक्रोकैपिटल और माइक्रोफाइनेंस सेवा के बारे में बताया। रीता की सहेली सत्या माइक्रोकैपिटल की मौजूदा सदस्य थीं और सत्या माइक्रोकैपिटल से मिले माइक्रोलोन की मदद से सफलतापूर्वक अपना डेयरी व्यवसाय स्थापित किया था। ऑफर को समझने के बाद तुरंत रीता वर्ष 17 में सत्या माइक्रोकैपिटल का सदस्य बन गयीं और 35000 रुपये के पहले लोन के लिए आवेदन कर

दिया। उद्यमी दम्पति ने लोन से प्राप्त धन का उपयोग अपने स्टोर का विस्तार करने और ऑफर में नई इन्वेंट्री जोड़ने में किया। रीता ने घर के बने बिस्कुट भी बेचने शुरू कर दिये जो जल्दी ही गाँव में लोकप्रिय हो गए। जनरल स्टोर चलाने के अपने पिछले अनुभव के कारण रीता और उनके पति नये काम को करने में सक्षम थे और उन्हें एक निश्चित आमदनी भी होने लगी जिसने उनकी जिन्दगी को उपलब्धि और नया जीवन पाने का अहसास दिया। चूंकि वे अपना व्यवसाय अच्छी तरह से कर रहे थे इसलिए दम्पति ने अपने लोन चुकाने की अवधि से पहले ही लोन चुकाने का फैसला किया और अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए 50000 रुपये के दूसरे लोन के लिए

आवेदन किया।

रीता देवी पिछले तीन वर्षों से लगातार सत्या के साथ जुड़ी हुई हैं।

अपने बिजनेस की इस सफर में उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं और सबसे नई उपलब्धि उनके मौजूदा स्टोर से सटे एक और स्टोर का शुभारंभ है। जिसके लिए उन्होंने हाल ही में 150000 रुपये के माइक्रो बिजनेस लोन के लिए आवेदन किया था।

अपनी सफलता के बारे में बात करते हुए रीता देवी ने बताया कि इस उम्र में जब सभी लोग बुजुर्गों से घर पर बैठने की उम्मीद करते हैं। हमें खुशी है कि हमने अपने सपनों पर काम किया और कभी हार नहीं मानी। हमारा एक सपना था और उसी को साकार करने के लिए काम करना शुरू किया। अब हम दोनों स्वतंत्र जीवन जी रहे हैं जो हम हमेशा से ही चाहते थे।

अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि हम आज जहाँ पहुँचे हैं वहाँ तक पहुँचाने में सत्या माइक्रोकैपिटल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। अपने जैसे गरीब लोगों की मदद करने के लिए मैं सत्या की पूरी टीम का हृदय से आभारी हूँ।

Publication	Media Darshan Live
Edition	Patna
Date	18 th August, 2020
Page No.	2

सत्या माइक्रोकैपिटल: बुजुर्ग उद्यमियों के सपनों को साकार करने में मददगार

पटना। यह एक आम धारणा है कि केवल युवा लोग ही महत्वाकांक्षी उद्यमी बनने का सोच सकते हैं, और केवल वे ही सफलता के लिए प्रयास कर सकते हैं, लेकिन बिहार में पटना के एक छोटे से गाँव गोनपुरा में रहने वाली 55 वर्ष की महिला, रीता देवी और उनके पति ने इस रूढ़िवादी सोच को नजरअंदाज करते हुए विकास की एक प्रेरणादायक मिसाल पेश की है। रीता की सोहन प्रसाद से शादी हुए 30 वर्ष से अधिक हो रहा है। एक अच्छे माँ-बाप के कर्तव्यों को पूरा करते हुए, उन्होंने अपने दो बेटों के लिए छोटे-छोटे बिजनेस जमाने और उनकी शादी करने में अपनी कड़ी मेहनत से अर्जित की गई सारी बचत लगा दी। ऑफर को समझने के बाद तुरंत, रीता 2017 में सत्या माइक्रोकैपिटल का सदस्य बन गयी और 35,000 रुपये के पहले लोन के लिए आवेदन कर दिया। उद्यमी दम्पति ने लोन से प्राप्त धन का उपयोग अपने स्टोर का विस्तार करने और ऑफर में नई इन्वेंट्री जोड़ने में किया। रीता ने घर के बने बिस्कुट भी बेचने शुरू कर दिये, जो जल्दी ही गाँव में लोकप्रिय हो गए। जनरल स्टोर चलाने के अपने पिछले अनुभव के कारण, रीता और उनके पति नये काम को करने में सक्षम थे, और उन्हें एक निश्चित आमदनी भी होने लगी, चूंकि वे अपना व्यवसाय अच्छी तरह से कर रहे थे, इसलिए दम्पति ने अपने लोन चुकाने की अवधि से पहले ही लोन चुकाने का फैसला किया और अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए 50,000 रुपये के दूसरे लोन के लिए आवेदन किया।

Publication	Tarun Mitra
Edition	Patna
Date	18 th August, 2020
Page No.	2

सत्या माइक्रोकैपिटल: बुजुर्ग उद्यमियों के सपनों को साकार करने में मददगार

पटना। यह एक आम धारणा है कि केवल युवा लोग ही महत्वाकांक्षी उद्यमी बनने का सोच सकते हैं, और केवल वे ही सफलता के लिए प्रयास कर सकते हैं, लेकिन बिहार में पटना के एक छोटे से गाँव गोनपुरा में रहने वाली 55 वर्ष की महिला, रीता देवी और उनके पति ने इस रूढ़िवादी सोच को नजरअंदाज करते हुए विकास की एक प्रेरणादायक मिसाल पेश की है। रीता की सोहन प्रसाद से शादी हुए 30 वर्ष से अधिक हो रहा है। एक अच्छे माँ-बाप के कर्तव्यों को पूरा करते हुए, उन्होंने अपने दो बेटों के लिए छोटे-छोटे बिजनेस जमाने और उनकी शादी करने में अपनी कड़ी मेहनत से अर्जित की गई सारी बचत लगा दी।

माँ-बाप के अपने कर्तव्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, इस दम्पति ने अपने साधारण-से छोटे स्टोर पर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया। लेकिन अपने बच्चों के लिए अपनी जिन्दगी की सारी बचत खर्च करने के बाद, उन्होंने अपने व्यवसाय को जमाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा और धन की कमी के कारण अपने स्टोर के संचालन में उनको चुनौतियों का सामना करना पड़ा। रोजमर्रा की अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अक्सर उन्हें अपने बच्चों पर निर्भर रहना पड़ता था, जो उन्हें मंजूर नहीं था।

एक दिन रीता अपनी एक सहेली से मिलने गई और उसे अपनी समस्या के बारे में बताया।

Publication	The Morning India
Edition	Patna
Date	13 th August, 2020
Page No.	9

SATYA MICROCAPITAL: HELPING ELDERLY ENTREPRENEURS TO REALISE & ACHIEVE THEIR DREAMS

PATNA: It is a common perception that only young people can dream of being ambitious entrepreneurs, and only they can strive for success. Rita Devi, a 55-year-old woman and her husband, who lived in a small village called Gonpura in Patna, Bihar, defies this orthodox thinking and has an inspirational growth story. Rita has been married to Sohan Prasad, for more than 30 years. Fulfilling the duties of good parents, they invested all their hard-earned savings in setting up their small business and wedding of their two sons. After successfully fulfilling their parental duties, the couple focused on their small general store. But, spending all their life savings on their children, took a toll on their business, and they began facing challenges in operating their store due to lack of funds. Often, they had to depend on their children for their daily needs which was not acceptable to them. One day, when Rita went to meet one of her friends and explained her on the challenges the couple were facing. It is then, Rita's friend told her about Satya Microcapital and their microfinance service. Rita's friend was an existing member of Satya Microcapital and had successfully established her dairy business with the help of the microloans offered by them. After understanding the offerings, Rita immediately became a member of Satya Microcapital in 2017 and applied for the first loan of Rs. 35,000. The enterprising couple utilised funds to expand their store and add new inventory to the offerings. Rita also started selling homemade biscuits that quickly became popular in the village. With their previous experience in running a general store, the couple was able to operate smoothly, and began making steady income which brought a new sense of achievement and rejuvenation in their lives. Since they were performing well in their business, the couple decided to pre-close their loan and applied for another loan of Rs. 50,000 to further expand their business. Rita Devi has constantly been associated with Satya for the past three years. She has achieved some significant milestones throughout the journey, the latest one being the opening of another store adjacent to her existing store. For the same purpose, she had recently applied for a Micro Business Loan of Rs. 1, 50,000. Talking about their success, Rita Devi said, "At this age when everyone expects older people to sit at home, we are glad that we worked on our dreams and never gave up. We had a dream and started working towards achieving the same. Now, we both are living an independent life that we always wanted." Further showing her gratitude, she said "Satya Microcapital has played such an important part in helping us reach where we are today. I want to wholeheartedly thank the entire team of SATYA for helping poor people like us to achieve our dreams."

Publication	Rashtriya Sahara
Edition	Patna
Date	13 th August, 2020
Page No.	5

बुजुर्ग उद्यमियों के सपनों को साकार करने में मददगार

पटना। यह एक आम धारणा है कि केवल युवा लोग ही महत्वाकांक्षी उद्यमी बनने का सोच सकते हैं, और केवल ये ही सफलता के लिए प्रयास कर सकते हैं, लेकिन बिहार में पटना के एक छोटे से गाँव गोनपुरा में रहने वाली 55 वर्ष की महिला, रीता देवी और उनके पति ने इस रुढ़िवादी सोच को नजरअंदाज करते हुए विकास की एक प्रेरणादायक मिसाल पेश की है। रीता की सोहन प्रसाद से शादी हुए 30 वर्ष से अधिक हो रहा है।

एक अच्छे माँ-बाप के कर्तव्यों को पूरा करते हुए, उन्होंने अपने दो बेटों के लिए छोटे-छोटे बिजनेस जमाने और उनकी शादी करने में अपनी कड़ी मेहनत से अर्जित की गई सारी वक्त लगा दी। माँ-बाप के अपने कर्तव्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, इस दम्पति ने अपने साधारण-से छोटे स्टोर पर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया। लेकिन अपने बच्चों के लिए अपनी जिन्दगी की सारी वक्त खर्च करने के बाद, उन्होंने अपने व्यवसाय को जमाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा और धन की कमी के कारण अपने स्टोर के संचालन में उनकी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। रोजमर्रा की अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अक्सर उन्हें अपने बच्चों पर निर्भर रहना पड़ता था, जो उन्हें मंजूर नहीं था। एक दिन रीता अपनी एक सहेली से मिलने गई और उसे अपनी समस्या के बारे में बताया।

रीता की सहेली ने रीता को सत्या माइक्रोकैपिटल और माइक्रोफाइनेंस सेवा के बारे में बताया। रीता की सहेली सत्या माइक्रोकैपिटल की मौजूदा सदस्य थीं और सत्या माइक्रोकैपिटल से मिले माइक्रोलोन की मदद से सफलतापूर्वक अपना डेयरी व्यवसाय स्थापित किया था। आफर को समझने के बाद तुरंत, रीता 2017 में सत्या माइक्रोकैपिटल का सदस्य बन गयी और 35,000 रुपये के पहले लोन के लिए आवेदन कर दिया।

उद्यमी दम्पति ने लोन से प्राप्त धन का उपयोग अपने स्टोर का विस्तार करने और आफर में नई इन्वेंट्री जोड़ने में किया। रीता ने घर के बने बिस्कुट भी बेचने शुरू कर दिये, जो जल्दी ही गाँव में लोकप्रिय हो गए। जनरल स्टोर चलाने के अपने पिछले अनुभव के कारण, रीता और उनके पति नये काम को करने में सक्षम थे, और उन्हें एक निश्चित आमदनी भी होने लगी, जिसने उनकी जिन्दगी को उपलब्धि और नया जीवन पाने का अहसास दिया।

चूंकि वे अपना व्यवसाय अच्छी तरह से कर रहे थे, इसलिए दम्पति ने अपने लोन चुकाने की अवधि से पहले ही लोन चुकाने का फैसला किया और अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए 50,000 रुपये के दूसरे लोन के लिए आवेदन किया। रीता देवी पिछले तीन वर्षों से लगातार सत्या के साथ जुड़ी हुई हैं। अपने बिजनेस की इस सफर में उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं और सबसे नई उपलब्धि उनके मौजूदा स्टोर से सटे एक और स्टोर का शुभारंभ है, जिसके लिए उन्होंने हाल ही में 1,50,000 रुपये के माइक्रो बिजनेस लोन के लिए आवेदन किया था। अपनी सफलता के बारे में बात करते हुए, रीता देवी ने बताया कि "इस उम्र में जब सभी लोग बुजुर्गों से धर पर बैठने की उम्मीद करते हैं, हमें खुशी है कि हमने अपने सपनों पर काम किया और कभी हार नहीं मानी। हमारा एक सपना था और उसी को साकार करने के लिए काम करना शुरू किया। अब हम दोनों स्वतंत्र जीवन जी रहे हैं जो हम हमेशा से ही चाहते थे।" अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए, उन्होंने कहा कि "हम आज जहाँ पहुँचे हैं, वहाँ तक पहुँचाने में सत्या माइक्रोकैपिटल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। अपने जैसे गरीब लोगों की मदद करने के लिए, मैं सत्या की पूरी टीम का हृदय से आभारी हूँ।"

Publication	Rojnama Rashtriya Sahara
Edition	Patna
Date	11 th August, 2020
Page No.	2

بیٹوں پر انحصار ہونے سے پہلے بزرگ جوڑوں نے دکان کھولی

جدوجہد کی اور فنڈز کی کمی کی وجہ سے اپنے اسٹور کو چلانے میں چیلنجوں کا سامنا کرنا پڑا۔ انہیں اکثر اپنی روزمرہ کی ضروریات کو پورا کرنے کے لئے

کش کو سمجھنے کے فوراً بعد ریتا 2017 میں سستیہ مانکرو کا پھل کی رکن بن گئیں اور 35000 روپے کے پہلے قرض کے لئے درخواست دی۔ کاروباری



شخص نے اپنے اسٹور کو بڑھانے اور پیش کش میں نئی انوینٹری شامل کرنے کے لیے قرض سے رقم استعمال کیا۔ ریتا نے گھریلو بکٹ بھی بیچنا شروع کر دیئے جو جلد ہی گاؤں میں مشہور ہو گئے۔ جنرل اسٹور چلانے کے اپنے سابقہ تجربے کی وجہ سے ریتا اور اس کے شوہر ایک نیا کام کرنے کے قابل تھے، اور ان کی بھی ایک خاص آمدنی تھی، جس سے ان کی زندگی کو کامیابی اور نئی زندگی کا احساس ہوا۔

اپنے بچوں پر انحصار کرنا پڑتا تھا، جسے انہوں نے منظور نہیں کیا۔ ایک دن ریتا اپنے دوست سے ملنے گئی اور اسے اپنی پریشانی کے بارے میں بتایا۔ ریتا کے دوست نے ریتا کو سستیہ مانکرو کا پھل اور مانیکرو فنانس سروسز کے بارے میں بتایا۔ ریتا کی دوست سستیہ مانکرو کا پھل کی موجودہ ممبر تھی اور اس نے سستیہ مانکرو کا پھل سے مانکروں کی مدد سے اپنا ڈیری بزنس کامیابی کے ساتھ قائم کیا۔ اس پیش

پتنہ (پریس دیلیز)

یہ ایک عام عقیدہ ہے کہ صرف نوجوان ہی خواہش مند کاروباری شخصیت بننے کے بارے میں سوچ سکتے ہیں، اور صرف وہ ہی کامیابی کے لئے جدوجہد کر سکتے ہیں، لیکن بہار کے پتنہ کے ایک چھوٹے سے گاؤں گون پورہ میں رہتے ہوئے 55 سال کی عمر میں رہائش پذیر عورت ریتا دیوی اور اس کے شوہر نے اس قدامت پسندانہ سوچ کو نظر انداز کرتے ہوئے ترقی کی ایک متاثر کن مثال قائم کی۔ ریتا 30 سال سے زیادہ عرصہ ہو چکا ہے۔ ایک اچھے والدین کے فرائض کی انجام دہی کرتے ہوئے اس نے اپنی تمام محنت سے کمائی ہوئی بچت اپنے دو بیٹوں کے لئے چھوٹے کاروبار قائم کرنے اور ان کی شادی کرنے میں لگا دی۔

والدین نے کامیابی کے ساتھ اپنے فرائض کی انجام دہی کے بعد جوڑے نے اپنے معمولی سے چھوٹے اسٹور پر توجہ دینا شروع کر دیا۔ لیکن ساری زندگی اپنے بچوں کے لئے بچت کرنے کے بعد، اس نے اپنا کاروبار قائم کرنے کے لئے